UP Board Class 7 History Notes Chapter 12 औरंगजेब का काल

औरंगज़ेब 1658-1707

औरंगज़ेब जन्म- 4 नवम्बर, 1618, मृत्यु- 3 मार्च, 1707, अहमदनगर) छठा मुग़ल बादशाह था, जिसने भारत पर शासन किया। उसने 1658 से 1707 ई. (अपनी मृत्यु तक) मुग़ल साम्राज्य पर शासन किया। औरंगज़ेब ने भारतीय उपमहाद्वीप पर आधी सदी से भी ज्यादा समय तक राज्य किया। वह अकबर के बाद सबसे ज्यादा समय तक शासन करने वाला मुग़ल शासक था। अपने जीवन काल में उसने दक्षिण भारत में मुग़ल साम्राज्य का विस्तार करने का भरसक प्रयास किया, पर उसकी मृत्यु के पश्चात मुग़ल साम्राज्य सिकुड़ने लगा। औरंगज़ेब के शासन में मुग़ल साम्राज्य अपने विस्तार के चरमोत्कर्ष पर था। वह अपने समय का शायद सबसे धनी और शातिशाली व्यक्ति था।

औरंगजेब का साम्राज्य

औरंगज़ेब ने सर्वप्रथम असम को अपने अधिकार में करना चाहा। उसने मीर जुमला को बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया और उसे असम को जीतने की ज़िम्मेदारी सौंपी। 1 नवम्बर, 1661 ई. को मीर जुमला ने कूचबिहार की राजधानी को अपने अधिकार में कर लिया। असम पर उस समय अहोम जाति के लोग शासन कर रहे थे। मीर जुमला ने अहोमों को परास्त कर 1662 ई. में 'गढ़गाँव' पर क़ब्ज़ा कर लिया। कालान्तर में असम के आन्तरिक संघर्ष का फ़ायदा उठा कर मुग़लों ने 1670 ई. में 'कामरूप' के अतिरिक्त शेष असम पर पुनः अधिकार कर लिया।

मुगल साम्राज्य का पतन

भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना 1526 ई. में बाबर ने की थी। उसके पश्चात् बाबर के वंशजों ने अपनी वीरता, साहस, योग्यता एवं कूटनीति के द्वारा मुगल साम्राज्य का विस्तार किया तथा उसे संगठित भी किया। अकबर, जहाँगीर व शाहजहाँ के शासनकाल में देश का सर्वतोन्मुखी विकास हुआ था, किन्तु 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् यह साम्राज्य विघटित होता गया और शीघ्र ही उसका पतन हो गया।

मुगल साम्राज्य के पतन के कारण-

(1) औरंगजेब की शासन नीति – मुगल साम्राज्य के पतन के लिए औरंगजेब के व्यक्तिगत चरित्र एवं शासन नीति को मुख्य रूप से उत्तरदायी माना जा सकता है। औरंगजेब एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था। उसने अपने शासनकाल में शिया मुसलमानों, हिन्दुओं, सिक्खों तथा अन्य धर्मावलम्बियों पर अनेक प्रकार के अत्याचार किए। उसने हिन्दुओं के मन्दिरों को तुड़वाकर मस्जिदों का निर्माण करवाया। राजपूत राजा जसवन्त सिंह के पुत्रों को मुसलमान बनाने का प्रयास किया। उसकी कट्टर धार्मिक नीति के कारण भारत की हिन्दू जनता, विशेष रूप से जाट, मराठे व राजपूत औरंगजेब के विरुद्ध हो गए.

(2) औरंगजेब की दक्षिण नीति- औरंगजेब की दक्षिण नीति भी दिशाहीन एवं सिद्धान्तहीन थी। उसने बीजापुर और गोलकुण्डा के शिया राज्यों
की शक्ति को नष्ट कर दिया। इसके फलस्वरूप दक्षिण में मराठों को अपना प्रभाव बढ़ाने एवं संगठित होने का सुअवसर प्राप्त हो गया। यदि औरंगजेब ने बीजापुर और गोलकुण्डा के शासकों के साथ सहयोग की नीति अपनाई

होती, तो दक्षिण में मराठों की शक्ति को नष्ट करने में ये राज्य औरंगजेब की सहायता अवश्य करते। इस प्रकार औरंगजेब की शासन नीति का मुगल साम्राज्य की शक्ति व संगठन पर विपरीत प्रभाव पड़ा, जिसके कारण मुगल साम्राज्य दिन-प्रतिदिन पतन के मार्ग पर अग्रसर होता गया।

(3) अयोग्य उत्तराधिकारी- औरंगजेब के शासनकाल में उत्पन्न अव्यवस्था और अराजकता को रोकने के लिए उत्तराधिकारियों की योग्यता आवश्यक थी। उस स्थिति पर अकबर जैसा योग्य एवं दूरदर्शी सम्राट ही नियन्त्रण पा सकता था। किन्तु दुर्भाग्यवश औरंगजेब के उत्तराधिकारियों में इस प्रकार की प्रशासनिक योग्यता व क्षमता का नितान्त अभाव था। उनमें बाबर व अकबर जैसा शारीरिक बल भी नहीं था। उनका आचरण भोग-विलास से पूर्ण होने के कारण वे साम्राज्य पर नियन्त्रण एवं शासन का संचालन करने में सफल नहीं हो सके। उन्होंने शासन की बुराइयों को दूर करने का कोई प्रयास नहीं किया।

(4) आर्थिक दुर्बलता- मुंगल सम्राटों की साम्राज्यवादी नीति के कारण सरकारी खजाना निरन्तर खाली होता गया। औरंगजेब के शासनकाल में आर्थिक संकट उस समय अधिक गहरा हो गया जब उसने दक्षिणी राज्यों के विजय अभियान में अपार धन का अपव्यय किया। जनता त्राहि-त्राहि करने लगी। यहाँ तक कि राजमहल में रानियाँ व राजपरिवार के अन्य सदस्य भी भूखों मरने लगे। आर्थिक दुर्बलता की यह स्थिति अधिक दिनों तक मुगल साम्राज्य को जीवित नहीं रख सकी।

(5) अमीरों व सरदारों का नैतिक पतन- औरंगजेब से पहले मुगल शासकों को मुगल सरदारों व अमीरों का पर्याप्त सहयोग मिला था, जिसके परिणामस्वरूप अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ को अपने समय में मुगल साम्राज्य को स्थायी और सुदृढ़ बनाने में सफलता मिली। परन्तु औरंगजेब के समय में इन सरदारों का नैतिक पतन हो गया था।

(6) रिक्त राजकोष- शाहजहाँ द्वारा भवनों के निर्माण और औरंगजेब के दक्षिण अभियान में अत्यधिक धन व्यय हुआ। इससे मुगलों का राजकोष लगभग खाली हो गया था और देश की आर्थिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई।

(7) मुगल साम्राज्य का विस्तृत होना – औरंगजेब के शासनकाल में मुगल साम्राज्य का अत्यधिक विस्तार हुआ, लेकिन उसका परिणाम लाभकारी न रहा। दक्षिण की रियासतों के मुगल साम्राज्य में मिल जाने के कारण उत्तर से दक्षिण तक इस विशाल साम्राज्य का शासन केन्द्रीय शासन व्यवस्था द्वारा सुचारु रूप से संचालित नहीं हो सका, जिसके परिणामस्वरूप औरंगजेब के समय में ही अनेक प्रान्तों के शासकों द्वारा विद्रोह प्रारम्भ हो गया।

(8) औरंगजेब की राजपूतों के प्रति नीति – औरंगजेब से पहले अकबर आदि शासकों ने राजपूतों के चारित्रिक गुणों को भलीभाँति समझा और उन्हें मित्र बनाया, जिसके कारण साम्राज्य को शक्तिशाली एवं स्थायी बनाने में सहयोग मिला। किन्तु औरंगजेब ने अपनी धर्मान्धता के कारण भारत की सबसे शक्तिशाली राजपूत जाति की उपेक्षा की, परिणामस्वरूप राजपूत मुगलों के शत्रु बन गए।

(9) विदेशी आक्रमण- मुगल शासनकाल में भारत पर दो प्रमुख आक्रमण अहमदशाह अब्दाली और नादिरशाह ने किए। इन्होंने यहाँ भयंकर कत्लेआम किया और अपार धन लूटा। इसके अतिरिक्त भारत की समृद्धि से प्रभावित होकर यूरोप के अनेक देशों के व्यापारियों ने यहाँ अपने अड्डे बना लिए। इनमें डच, पुर्तगाली, फ्रांसीसी एवं अंग्रेज प्रमुख थे। इन्होंने सुदृढ़ स्थिति प्राप्त कर साम्राज्य स्थापित करना शुरू कर दिया। इससे मुगल साम्राज्य को काफी क्षति पहुँची। ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने तो मुगल साम्राज्य के पतन में प्रभावकारी भूमिका निभाई।

https://www.evidyarthi.in/